11

निर्वासन का काल

यरूशलेम के विनाश से ज़रुज़्बाबेल के शासन में वापस आने तक, 586-536 ई.पू.

परिचायक-समीक्षा व सारांश। -अब हमें मनुष्य, पाप और छुटकारे के प्रारम्भिक चरणों के इतिहास का पता चल गया है। हमने इब्राहीम के बुलाए जाने से उसके अगले कालों अर्थात पुरखाओं के युग, मिसर की दासता, जंगल में घूमने, विजय, न्यायियों, संयुज्त राज्य, दोहरे राज्य और अकेले यहूदा के चुने हुए लोगों के पन्द्रह सौ वर्ष का भविष्य देखा। हमने देखा है कि दाऊद और सुलैमान के दिनों में, जो राष्ट्रीय जीवन की एक शानदार उत्पज़ि थी, उसके बाद फूट और पतन हुआ।

उज़री राज्य राजनैतिक अंधेरे और आत्मिक रात में चला गया था। एक सौ चालीस से अधिक वर्ष के चंचल जीवन के बाद यरूशलेम विनाश में और राजा और लोग सात सौ मील दूर बाबुल की दासता में चले गए। हर जगह नृशंसता, अंधविश्वास और मूर्तिपूजा हावी थी। लोगों को लगता था कि मानवीय छुटकारे का प्रयोग एक असफलता है और परमेश्वर का ज्ञान सदा के लिए खत्म हो गया है। लेकिन यह कोई प्रयोग नहीं है। अंधेरी रात से आशा का एक चमकीला तारा निकला। यह तारा उज़री राज्य के पतन के बाद और यहूदा के पतन और निर्वासन के दौरान निकला था, जिसमें मीका और यशायाह और यिर्मयाह और दानिय्येल और जकर्याह ने आने वाले मसीह और विश्वव्यापी राज्य की शानदार भविष्यवाणियां लिखीं। धीरे-धीरे महसूस होने लगता है कि इब्रानी धर्मतन्त्र केवल वह कंटीला पौधा है जिसका विशुद्ध आत्मिक राज्य सज़्पूर्ण फूल और फल होना है। फूल खिलने तक कंटीला पौधा खड़ा रहेगा। इस कारण, निर्वासित और तितर-बितर हो जाने के बावजूद यहूदा के लिए राष्ट्रीय जीवन में वापसी और नये सिरे से शुरुआत होना आवश्यक है।

यशायाह, मीका, हुल्दा और यिर्मयाह जैसे नबियों के द्वारा बार-बार दासता की भविष्यवाणी की गई थी।[1] ये भविष्यवाणियां नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर कज़्जा करके और यहूदी लोगों को अपने देश ले जाकर अनजाने में पूरी कीं।

1. यिर्मयाह और मिसर में निर्वासन (2 राजा 25:22-26; यिर्म. 40-44)। - यरूशलेम के विनाश के बाद किसानों और दाख की बारियों की देखभाल करने वाले ही बचे थे। यिर्मयाह ने अपने प्रिय देश के उजाड़ों में देर तक रहने को प्राथमिकता देते हुए, बाबुल के साथ शुरक्षित व्यवहार करने से इन्कार कर दिया। परन्तु बचे हुए लोग आपस में लड़ने लगे। उनके हाकिम गदल्याह की इश्माइल के अधीन यहूदी षड्यन्त्रकारियों के एक गुट

द्वारा हत्या कर दी गई। बाकी के नबूकदनेस्सर द्वारा बदला लेने के भय से, योहानान की अगुआई में मिसर को भाग गए। यिर्मयाह मिसर में भाग जाने का गंभीरता से विरोध करने लगा, परन्तु उसे पुराना प्रिय देश छोड़ना पड़ा और निर्वासितों के साथ मिसर में जाना पड़ा। वहां, तहपन्हेस के सीमावर्ती नगर में, महान भविष्यवज़्ता ने अपनी अंतिम भविष्यवाणी लिखी। एक प्रारज़्भिक मसीही परज़्परा के अनुसार, उसे अपने साथी निर्वासितों के हाथों शहीदी मिली; यहूदी परज़्परा के अनुसार मिसर से बच निकलकर वह बाबुल को चला गया। परन्तु इसमें, जैसा कि बहुत दूसरे मामलों में, यशायाह और यहेजकेल और दानिय्येल और पतरस और पौलुस और यूहन्ना की तरह पवित्र शास्त्र उसके लेखों से भरा पड़ा है। उसके जीवन के अंतिम दृश्यों में चुप है। मिसरी निर्वासितों में से किसी में वापस आने का कोई वर्णन नहीं है।

2. दानिय्येल और बाबुल की पहली दासता (2 राजा 24:1; 2 इति. 36:5-8; दानि. 1-12)। -हमने देखा है कि नबूकदनेस्सर ने यहूदिया पर तीन आक्रमण किए। पहले आक्रमण में (606 ई.पू.) वह शाही परिवार के चार युवकों, दानिय्येल, शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को ले गया। उन्हें राजा के दरबार में बड़े सज़्मान से शिक्षा दी गई, परन्तु इन्होंने अपने आप को बाबुल की विलासिता और बाबुल की मूर्तिपूजा के विरुद्ध खड़े होकर भलाई के काम के लिए अलग कर लिया।

क. नबूकदनेस्सर का स्वप्न। -दानिय्येल सबसे पहले नबूकदनेस्सर के स्वप्न की सोने के सिर, चांदी की छाती, पीतल की जांघों और लोहे की टागों वाली बड़ी मूर्ति के स्वप्न का अर्थ बताने से तस्वीर में आया। दानिय्येल द्वारा बताए गए अर्थ के अनुसार, उस मूर्ति का सिर नबूकदनेस्सर राजा और बाबुल का सम्राज्य था; दूसरे प्रश्नों का अर्थ उसके बाद आने वाले महान साम्राज्य थे।

ख. आग में तीन लोग। -स्वप्न के बाद नबूकदनेस्सर घमण्ड से फूल गया। उसने एक बहुत बड़ी मूर्ति बनवाई और सब लोगों को झुककर उसे माथा टेकने की आज्ञा दी। शद्रक, मेशक और अज़्बेदनगो में अपने विश्वास में स्थिर रहने का साहस था, जिस कारण उन्होंने उस मूर्ति के सामने झुकने से इन्कार कर दिया। दण्ड के रूप में उन्हें एक बहुत ही तेज आग में फैंक दिया गया, परन्तु परमेश्वर की ओर से आश्चर्यकर्म के द्वारा उनकी रक्षा की गई।

ग. दानिय्येल के दर्शन। -दानिय्येल को स्वयं विश्व-साम्राज्यों के अलग-अलग दर्शन मिले: बाबुल, फारस, मकिदुनिया, रोम और वह राज्य जिसकी स्थापना परमेश्वर ने करनी थी और जिसने सारी पृथ्वी को भरकर सदा के लिए रहना था।

घ. दानिय्येल शेरों की गुफा में। दानिय्येल फारस की शज़्ति के उदय होने से पहले बाबुल के पतन को देखने के लिए रहा। उसकी आज्ञा बोधक योग्यताओं से फारसी दरबारियों की ईर्ष्या बढ़ गई, और हर रोज की उसकी नियमित प्रार्थना के कारण उन्होंने उसे शेरों के आगे फिंकवा दिया, परन्तु वहां परमेश्वर ने उसे बचा लिया।

3. यहेजकेल और बाबुल की दूसरी दासता (2 राजा 24:8-16; 2 इति. 36:9,

10; यहेज. 1:1, 2)। -इस दूसरे आक्रमण में (लगभग 597 ई.पू.) नबूकदनेस्सर दस हज़ार लोगों को बंदी बनाकर ले गया, जिसमें यहेजकेल नबी भी था। वे कबार नदी में जो फरात में बाबुल के आगे तीन सौ मील तक आती है, बस गए। उनमें झूठे नबी उठे जो शीघ्र ही छुटकारे की प्रतिज्ञा देने लगे। यिर्मयाह ने उन्हें यह बताते हुए कि यह दासता सज़र वर्ष तक रहेगी (पहले निर्वासन से गणना करके, 606 ई.पू.) और उन्हें घर और बगीचे बनाने की सलाह देते हुए (यिर. 29) यरूशलेम से एक पत्र लिखा। कबार नदी पर ही यहेजकेल नबी ने वे दर्शन लिखे जिनसे उसकी पुस्तक तैयार हुई है; और यह तभी की बात है जब ''बाबुल की नहरों के किनारे'' से आरज़्भ करते हुए 137वां भजन लिखा गया था।

पाद टिप्पणी

[1]2 राजा 20:17; 21:10-15; 22:14-17; यिर्म. 25:9-11; 34:2, 3; मीका 3:8-12।